



श्री महाशिवरात्रि व्रत कथा

ॐ नमः शिवाय

FULL DISCLAIMER

This book is for educational, inspirational, and cultural purposes only. The remedies, rituals, affirmations, breathing methods, and spiritual practices described are based on traditional beliefs, historical customs, and personal development principles. They are not guaranteed solutions.

This book does not replace advice from licensed doctors, psychologists, financial advisors, lawyers, or other qualified professionals. If you have medical symptoms, mental health concerns, legal matters, or financial risk, seek professional help.

Use all remedies responsibly, ethically, peacefully, and according to local law. Do not use fire, herbs, fasting, incense, or physical practices in unsafe ways. The author and publisher are not liable for misuse.

Results in life depend on effort, discipline, timing, environment, skill, and many other factors. No spiritual method guarantees money, marriage, success, healing, or protection.

Hargharpanditji

"PUJA ON YOUR SCREEN, BLESSINGS
AT YOUR DOOR"

॥ श्री महाशिवरात्रि व्रत कथा ॥

फाल्गुन कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तिथि को महाशिवरात्रि का पावन पर्व मनाया जाता है। यह रात्रि भगवान शिव को अत्यंत प्रिय मानी गई है। प्राचीन कथा के अनुसार एक बार माता पार्वती ने भगवान शिव से पूछा कि ऐसा कौन सा व्रत है जिससे भक्तों की सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हों और आपकी विशेष कृपा प्राप्त हो।

तब भगवान शिव ने कहा - फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी की रात्रि में जो भक्त उपवास रखकर, जागरण कर, श्रद्धा से मेरा पूजन करता है, उसे धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति होती है। यह व्रत महाशिवरात्रि कहलाता है।

एक अन्य प्रसिद्ध कथा के अनुसार एक शिकारी जंगल में शिकार की खोज में गया। दिनभर उसे कुछ नहीं मिला। रात्रि होने पर वह भयवश एक बेल वृक्ष पर चढ़ गया।

उस वृक्ष के नीचे शिवलिंग स्थापित था, परन्तु शिकारी को इसका ज्ञान नहीं था। रातभर जागते हुए वह समय-समय पर बेलपत्र तोड़कर नीचे गिराता रहा और पानी की बूंदें भी टपकती रहीं।

अनजाने में बेलपत्र और जल शिवलिंग पर चढ़ते रहे। शिकारी रातभर जागरण करता रहा। इस प्रकार उससे महाशिवरात्रि का व्रत, पूजन और रात्रि जागरण अनजाने में सम्पन्न हो गया।

प्रातःकाल भगवान शिव उसकी भक्ति से प्रसन्न हुए। उसके पाप नष्ट हुए और उसे उत्तम गति प्राप्त हुई।

एक और मान्यता है कि इसी रात्रि में भगवान शिव ज्योतिर्लिंग रूप में प्रकट हुए थे, और इसी दिन शिव-पार्वती विवाह भी सम्पन्न हुआ। इसलिए महाशिवरात्रि को शिव आराधना, उपवास, रात्रि जागरण और अभिषेक का महान पर्व माना जाता है।

॥ व्रत विधि संक्षेप ॥

प्रातः स्नान कर व्रत का संकल्प लें।
दिनभर उपवास रखें।

शिवलिंग पर जल, दूध, दही, घी, शहद, शक्कर से अभिषेक करें।
बिल्वपत्र, धतूरा, पुष्प अर्पित करें।
ॐ नमः शिवाय और महामृत्युंजय मंत्र जप करें।
रात्रि के चार प्रहर पूजन करें।
भजन, कीर्तन और जागरण करें।
प्रातः आरती कर व्रत पूर्ण करें।

॥ चार प्रहर पूजन ॥

पहला प्रहर = जल अभिषेक।
दूसरा प्रहर = दूध अभिषेक।
तीसरा प्रहर = घृत / दही अभिषेक।
चौथा प्रहर = शहद / गंगाजल अभिषेक।

॥ फल ॥

पाप नाश।
मनोकामना सिद्धि।
विवाह सुख।
संतान सुख।
आरोग्य।
धन-समृद्धि।
भय नाश।
मोक्ष प्राप्ति।

॥ मंत्र ॥

ॐ नमः शिवाय।
ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्॥
॥ इति श्री महाशिवरात्रि व्रत कथा सम्पूर्णम् ॥